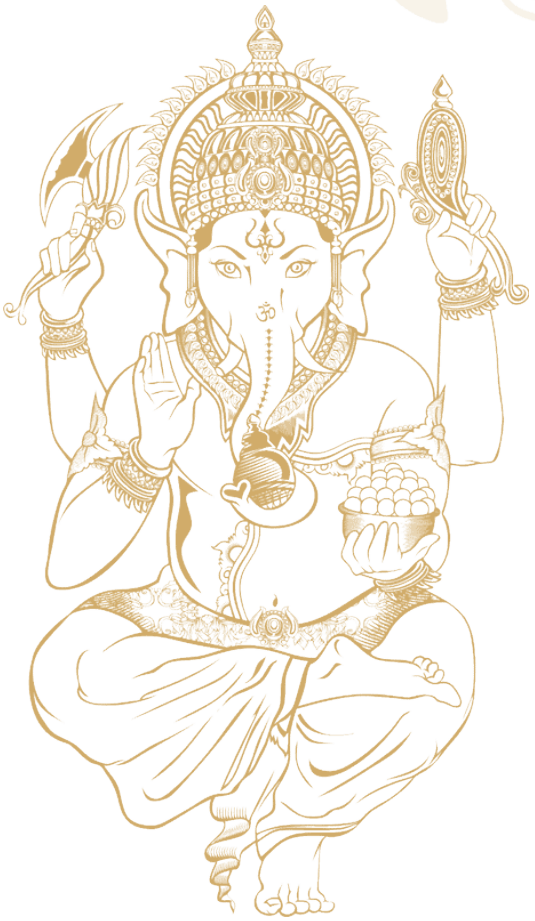

Miss

19 Dec 2025

03:36 PM

Simla

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120620101

तिथि 19/12/2025 **समय** 15:36:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Simla **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:16
अक्षांश 31:06:00 उत्तर **रेखांश** 77:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:07:43 घं
वेलान्तर	00:02:54 घं
सूर्योदय	07:14:48 घं
सूर्यास्त	17:22:21 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	15
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	शूल
करण	चतुष्पाद

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	यी-यीशा
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

बुध 4वर्ष 7मा 15दि

बुध	**19/12/2025**
	04/08/2030
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/12/2025
गुरु	25/11/2027
शनि	04/08/2030

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 4मा 9दि

भद्रिका	**19/12/2025**
	30/04/2027
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/12/2025
मंगला	28/01/2026
पिंगला	10/05/2026
धान्या	09/10/2026
भ्रामरी	30/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:53:26	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			03:31:55	धनु	मूल	2	केतु	सूर्य	मित्र राशि	1.15	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			26:22:23	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	गुरु	नीच राशि	1.31	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:52:55	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.16	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			15:48:13	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	सम राशि	1.18	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		28:40:33	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.14	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र		अ	29:09:10	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	सम राशि	1.10	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि			01:20:25	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.08	कलत्र	आयु	मित्र
राहु	व		17:52:08	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		17:52:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

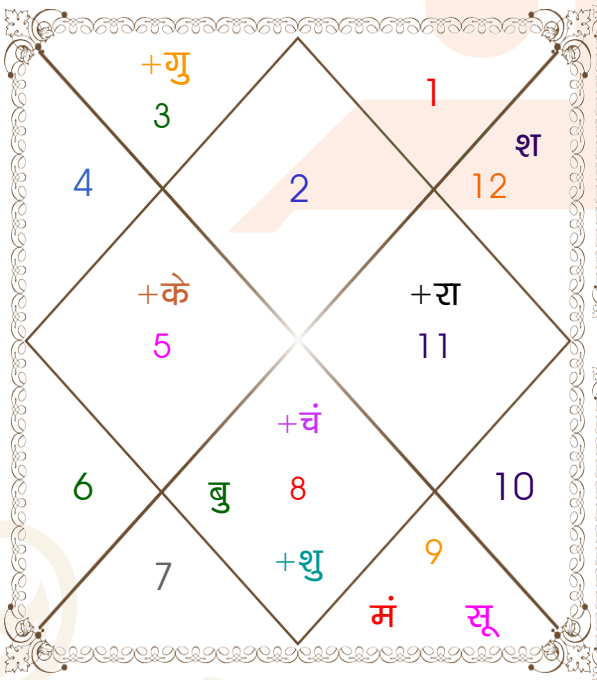

चन्द्र कुंडली

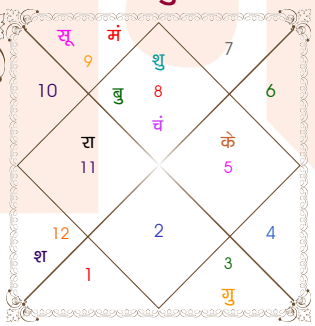

नवमांश कुंडली

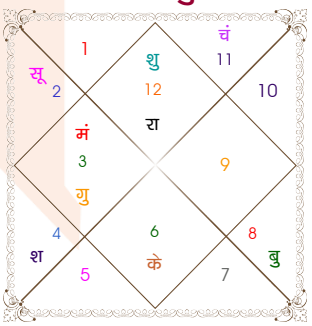

सर्वाष्टकवर्ग

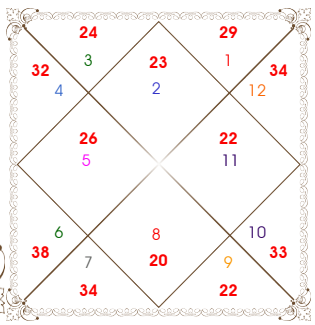

दशमांश कुंडली

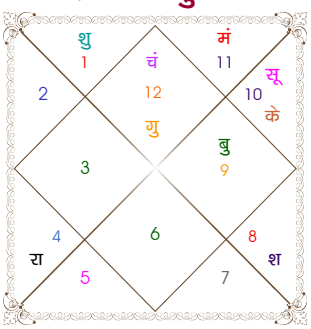

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण ब्राहमण, गण राक्षस, वर्ग मृग तथा योनि मृग होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "यि" या "यी" से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने से जातक की माता को अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान के द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस मंत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का भी विधि पूर्वक हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि विधान से शान्ति करने पर इसका अरिष्ट प्रभावहीन हो जाता है तथा संबंधित जातक प्रसन्न रहता हैं। जप एवं हवन

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप जीवन में एक ख्याति प्राप्त महिला रहेंगी तथा दूर दूर तक लोग आपका गुणगान करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी तथा इससे आपका सौन्दर्य भी आकर्षक बनेगा। नाना प्रकार के धनैश्वर्य से युक्त होकर आप एक सामर्थ्यवान महिला होंगी तथा अधिकांश कार्यों को स्वयं करने की क्षमता रखेंगी। आप का समाज में प्रचुर मात्रा में प्रभुत्व भी कायम रहेगा तथा सभी लोग आपकी लोकप्रियता तथा प्रतिष्ठा को सदैव स्वीकार करेंगे। साथ ही आप भाषण देने की कला में भी निपुण होंगी एवं अपने भाषणों से लोगों को प्रभावित करेंगी। अतः आप नेतृत्व भी प्राप्त कर सकेंगी।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आप स्वभाव से उग्र रहेंगी तथा क्रोध की प्रबलता आप में विद्यमान रहेगी अतः यदा कदा आपको इसके कारण आर्थिक हानि भी उठानी पडेगी। समाज में आपके अन्जनों से मधुर संबंध रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा धर्म एवं ईश्वर में आपकी विशेष श्रद्धा रहेगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक कोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

समाज में आपके बहुत से मित्र होंगे तथा अपने मित्र मंडली में आप श्रेष्ठ एवं लोकप्रिय समझी जाएंगी। आप अत्यन्त ही सन्तोष युक्त स्वभाव की भी रहेंगी तथा अपनी यथाशक्ति अर्जन किए गये धन आदि में ही पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट रहेंगी। आप अपनी आवश्यकताओं को सामर्थ्य के अर्न्तगत ही रखेंगी। लेकिन धर्माचरण में रत रहते हुए भी आपकी उग्रता में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं आएगी।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा कोधी होता है।

आप लेखन कार्य के प्रति अपनी रूचि रखेंगी तथा काव्य सृजन में सफलता अर्जित कर सकेगी। आप एक सहनशील स्वभाव की महिला होंगी एवं सुख दुःख को समान रूप से समझने एवं अनुभूति करने में सक्षम रहेंगी। आप चतुराई पूर्ण तरीके से अपने समस्त कार्यों को सिद्ध करने में भी सफलता प्राप्त करेंगी। निम्न श्रेणी के लोगों में आप अत्यन्त ही श्रद्धेय एवं पूजनीय समझी जाएंगी तथा वे लोग आपके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं भक्तिभावना का प्रदर्शन करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत

होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी आखें बहुत ही सुन्दर तथा बड़ी बड़ी होगी एवं वक्षस्थल भी विस्तृत रहेगा। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का भी समावेश रहेगा। आपके हाथ या पैर में मछली आदि का चिन्ह भी अंकित हो सकता हैं। आपके हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की भी रहेंगी। पिता तथा गुरूजनों से आपके अच्छे संबंध ही रहेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहगो। बाल्यावस्था में आप शारीरिक व्याधियों से पीड़ित रहेंगी। अपनी बुद्धिचातुर्य तथा योग्यता के बल पर आप राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त कर सकेगी। आप कूर तथा कठोर कार्यों को करने में भी अपनी रूचि प्रदर्शन करेंगी। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्यक्षेत्र चुनने में प्राथमिकता देंगी। कुटिलता के भाव दृषिटगोचर भी होंगे। इसके अतिरिक्त गुप्त रूप से पापकर्मों को करने की ओर आपकी प्रवृति रहेंगी।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट तथा मस्तक भी विस्तृत आकार का रहेगा। अन्य लोगों की सुन्दर चीजों को देखकर आपमें लोलुपता भाव की प्रवलता दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में कान्ति तथा लावण्यता भी रहेंगी आपके अन्दर धार्मिक भावना भी एवं ईश्वर या धर्म के प्रति भी श्रद्धा रहेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून भी अधिकांश आघात से युक्त रहेंगे। आप किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा चतुराई से उसे सम्पन्न करेंगी। बन्धुजनों से आपको कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। आपका पराक्रम भी समाज में रहेगा तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके स्वभाव में उग्रता भी रहेगी तथा सरकार से आप आर्थिक हानि को भी प्राप्त करेंगी।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप अपने जीवन काल में विपुल धन की स्वामिनी बनेंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का भी पालन करेंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली रहेंगी। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान, आदर तथा लाभ प्राप्त होगा। आपकी नियुक्ति राजकीय सेवा में भी हो सकेगी। आपके मन में हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी विद्यमान रहेगी तथा इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दृढसंकल्पी

महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप नित्य कोई न कोई कार्य अवश्य करती रहेंगी। साहस से भी आप युक्त रहेंगी। तथा निर्मता पूर्वक अपने कार्यकलापो को सम्न्न करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने को भी उद्यत होंगी परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। स्वभाव में उग्रता के कारण अन्य लोगों से आपका विवाद भी नित्य चलता रहेगा। कभी कभी आप अपने को हृदय से अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगी। आप अपने जीवन काल में शान्ति की अनुभूति अल्प मात्रा में ही करेंगी अन्यथा अशान्त ही रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यकाल से ही घर से बाहर प्रवास करेंगी तथा भ्रमण में भी आप काफी रूचिशील रहेंगी। आप स्वभाव से अभिमानी भी होंगी तथा समय समय पर इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में कठोर भाव रहेगा परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी। अतः साहसपूर्वक धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप समय समय पर निपुणता का भी प्रदर्शन करेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाली होंगी। आपका हृदय कठोर रहेगा तथा करूणा के भाव का उसमें न्यूनता परिलक्षित होगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप में उग्रता की भी प्रबलता रहेगी तथा शीघ्र ही आप अकारण ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित हो जाया करेंगी। स्वास्थ्य की उत्तमता के कारण आपमें शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा परन्तु अन्य लोगों से आपका विवाद होता रहेगा जिससे अधिकांश लोग आपके प्रति विरोध का भाव रखेंगे।

जीवन में कभी कभी आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से जीवन में पीड़ित हो सकती हैं। आपकी देहाकृति भी सुदर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में आप कटु शब्दों का यदा कदा प्रयोग करेंगी जिससे आप से अन्य लोग अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपर्वक आप अपने सम्भाषण में मधुर

शब्दो का ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेगी तथा अपने कार्यों को स्वयं ही करने की इच्छुक रहेंगी। आप हिंसावृति से दूर शान्त स्वभाव से युक्त रहेंगी। आपकी आजीविका भी उत्तम साधनों के द्वारा सुसम्पन्न होगी। सत्य के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा आजीवन इसके पालन के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। अपने बन्धुवर्ग तथा संबंधियों के मध्य आप प्रिय रहेंगी तथा सभी लोग आपको पूर्ण स्नेह प्रदान करेंगे। आप एक धर्म निष्ठ महिला भी होंगी तथा ईश्वर के प्रति अपनी पूर्ण आस्था रखेंगी। साथ ही वीरता का अभाव भी आप में नहीं रहेगा एवं विवादादि में अधिकांश रूप से सफलता ही प्राप्त करेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी

अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथमप्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार , प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं या अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र आदि अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोम तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए एवं सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थो का दान भी श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com